सूचना संख्या- 2026/ 137

केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय

CENTRAL SANSKRIT UNIVERSITY

Accredited with A++ Grade by NAAC

एकलव्य परिसर/EKALAVYA CAMPUS

सिपाई पारा, लेम्बुचेरा, पश्चिम त्रिपुरा, त्रिपुरा

SIPAL PARA, LEMBUCHERRA, WEST TRIPURA, TRIPURA

दिनांक/Dated: 14/08/2026

सूचना/Notice

सभी छात्र-छात्राओं तथा संकाय सदस्यों को हर्षपूर्वक सूचित किया जाता है कि केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के पत्र क्रमांक 9-1/CSU/DSW/कार्यक्रम/2025/138, दिनांक 06-08-2026 के अनुपालन में के.सं.वि., एकलव्य परिसर, अगरतला में दिनांक 21 अगस्त से 28 अगस्त 2026 तक संस्कृत सप्ताह मनाने का निर्णय लिया गया है। जिसके अन्तर्गत छात्र-छात्राओं के लिए विभिन्न संस्कृत-आधारित प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाएगा। प्रतियोगिताएँ निम्नलिखित तीन स्तरों पर आयोजित की जाएँगी—

1. **विद्यालय स्तर (कक्षा 1 से 10 तक)**
2. **महाविद्यालय स्तर (प्राक्-शास्त्री प्रथम वर्ष से शास्त्री प्रतिष्ठा तृतीय वर्ष)**
3. **विश्वविद्यालय स्तर (शास्त्री प्रतिष्ठा चतुर्थ वर्ष से विद्यावारिधि तक)**

महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय स्तर की सभी प्रतियोगिताएँ एकलव्य परिसर में ही आयोजित की जाएँगी। इन प्रतियोगिताओं से सम्बन्धित सम्पूर्ण नियमावली, दिशा-निर्देश एवं प्रतियोगिता-विवरण नीचे संलग्न किए गए हैं। सभी प्रतिभागियों से अनुरोध है कि प्रतियोगिताओं में भाग लेने से पूर्व संलग्न नियमों एवं दिशा-निर्देशों का ध्यानपूर्वक अवलोकन करें। महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय स्तर के प्रतियोगिताओं में भाग लेने के इच्छुक सभी छात्र-छात्राओं से अनुरोध है कि वे नीचे दिए गए पंजीकरण लिंक (Google Form) के माध्यम से अपना पंजीकरण अंतिम तिथि: 20 अगस्त 2026 के भीतर अवश्य पूर्ण करें।

पंजीकरण लिंक: https://forms.gle/iWFMGyceRF6kcSvHA

अतः परिसर के सभी छात्र-छात्राओं से आग्रह है कि अधिकाधिक संख्या में विभिन्न प्रतियोगिताओं में उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए संस्कृत सप्ताह को सफल, सार्थक एवं गरिमामय बनाने में अपना सक्रिय योगदान प्रदान करें।

संलग्न-प्रतियोगिता नियमावली

14/8/2026

(प्रो. गुरुचरण सिंह नेगी)
निदेशक

निदेशक/Director
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय/Central Sanskrit University
एकलव्य परिसर, अगरतला/Ekalavya Campus, Agartala

प्रतिलिपि- सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु –

1. समस्त छात्र, के.सं.वि,. एकलव्य परिसर।
2. सह-निदेशक एवं संयोजक - संस्कृत सप्ताह, के.सं.वि., एकलव्य परिसर।
3. डॉ. उमेश चन्द्र मिश्र, सह- आचार्य, सह-संयोजक, संस्कृत सप्ताह एवं जनसम्पर्क अधिकारी (PRO), के. सं. वि., एकलव्य परिसर।
4. समस्त संकाय सदस्य, के.सं.वि., एकलव्य परिसर।
5. सभी संस्कृत सप्ताह-समन्वयक, सह-समन्वयक, समिति सदस्य, के. सं. वि., एकलव्य परिसर।
6. डॉ. सुमन आचार्जी, सहायक आचार्य, समन्वयक-आईक्यूएसी एवं सह-जनसम्पर्क अधिकारी (APRO), के. सं. वि., एकलव्य परिसर।
7. छात्रावास वार्डन (बालक एवं बालिक छात्रावास), के.सं.वि., एकलव्य परिसर।
8. श्री दीपेन्द्र मिश्र, तकनीकी सहायक, के.सं.वि., एकलव्य परिसर वेबसाईट पर सूचना अपलोड करने हेतु।
9. सूचना पट्ट।
10. सूचना फाइल।
11. सम्बन्धित संचिका।

केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः
एकलव्यपरिसरः, अगरतला, त्रिपुरा
संस्कृतसप्ताहमहोत्सवः- २०२६

(२१-०८-२०२६ तः २८-०८-२०२६ पर्यन्तम्)

प्रतियोगिताविषयाः नियमावली च

विद्यालयस्तरीयप्रतियोगिताः (SCHOOL LEVEL COMPETITIONS)

कक्ष्या १ तः १० पर्यन्तम् (For students of Classes 1 to 10)

विद्यालयस्तरीयप्रतियोगिताः, कनिष्ठस्तरे – (कक्ष्या १ तः ७ पर्यन्तम्)
JUNIOR CATEGORY - Classes 1 to 7

दिनाङ्कः - २२-०८-२०२६
समयः- प्रातः 11:00 वादनतः (11:00 AM onwards)

स्थानम् - आर्मी-पब्लिक-स्कूल, अगरतला
Place - Army Public School, Agartala

क्र.	स्पर्धाः (Competition)	विषयाः/नियमाः (Topic/ Guidelines)
१.	श्रीमद्भगवद्गीताकण्ठपाठः Shrimad Bhagavad Gita Recitation	प्रतिभागिनः श्रीमद्भगवद्गीतायाः यथेष्टं पञ्चश्लोकान् कण्ठस्थीकृत्वा पाठनीयम्। Participants shall memorize and recite any 5 verses from Shrimad Bhagavad Gita.
२.	श्लोककण्ठपाठः Shloka Recitation	प्रतिभागिनः यथेष्टं दशसंस्कृतश्लोकान् कण्ठस्थीकृत्वा पाठनीयम्। Participants shall memorize and recite any 10 Sanskrit Shlokas.

विद्यालयस्तरीयस्पर्धाः, वरिष्ठस्तरे - (कक्ष्या ८ तः १० पर्यन्तम्)
SENIOR CATEGORY - Classes 8 to 10

दिनाङ्कः - २२-०८-२०२६
समयः- प्रातः 11:00 वादनतः (11:00 AM onwards)

स्थानम् - आर्मी-पब्लिक-स्कूल, अगरतला
Place - Army Public School, Agartala

क्र.	स्पर्धाः (Competition)	विषयाः/नियमाः (Topic/ Guidelines)
१.	भाषणप्रतियोगिता Speech Competition	**विषयः- देववाणी संस्कृतम् (Devavani Sanskritam)** प्रत्येकप्रतिभागिने भाषणाय पञ्चनिमेषाः प्रदास्यते। Each participant will be given 5 minutes for the speech.
२.	अभिनयप्रतियोगिता Acting Competition	अभिनयस्य प्रस्तुतिः अधिकतमं दशनिमेषेषु पूर्णा भवेत्। The performance must be completed within a maximum of 10 minutes.
३.	सुभाषितकण्ठपाठः Subhashita Recitation	प्रतिभागिनः अधोनिर्धारितेषु सुभाषितेषु यथेष्टं दशश्लोकान् कण्ठस्थीकृत्वा पाठनीयम्। Participants shall memorize and recite any ten prescribed Subhashitas given below.
४.	शब्दरूपकण्ठपाठः Shabdarupa Recitation	Prescribed words / निर्धारिताः शब्दाः- राम-फल-लता-नदी-मुनि

केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः
एकलव्यपरिसरः, अगरतला, त्रिपुरा
संस्कृतसप्ताहमहोत्सवः- २०२६

(२१-०८-२०२६ तः २८-०८-२०२६ पर्यन्तम्)

प्रतियोगिताविषयाः नियमावली च

महाविद्यालयस्तरीयप्रतियोगिताः (COLLEGE LEVEL COMPETITIONS)

कनिष्ठस्तरे प्राक्-शास्त्रिप्रथमवर्षतः शास्त्रिप्रतिष्ठातृतीयवर्षपर्यन्तम् (For students of Classes 11th to B.A. 3rd Year)

स्थानम् - के.सं.वि.वि., एकलव्यपरिसरः अगरतला Place - CSU, Ekalavya Campus, Agartala

क्र.	स्पर्धाः (Competition)	दिनाङ्कः/ समयः/कक्षः Date/Time/Room	विषयाः/नियमाः (Topic/ Guidelines)
१.	श्रीमद्भगवद्गीताकण्ठपाठः Shrimad Bhagavad Gita Recitation	Date - २१-०८-२०२६ Time – 03:00 P.M. Place- Multipurpose Hall	प्रतिभागिनः श्रीमद्भगवद्गीतायाः श्लोकान् कण्ठस्थीकृत्वा पाठनीयम्। Participants shall memorize and recite the verses from Shrimad Bhagavad Gita.
२.	अमरकोशकण्ठपाठः Amarakosha Recitation	Date - २५-०८-२०२६ Time – 11:00 A.M. Place- Multipurpose Hall	प्रतिभागिनः अमरकोशं कण्ठस्थीकृत्वा पाठनीयम्। Participants shall memorize and recite the Amarakosha.
३.	अष्टाध्यायीकण्ठपाठः Ashtadhyayi Recitation	Date - २५-०८-२०२६ Time – 12:00 P.M. Place- Multipurpose Hall	प्रतिभागिनः अष्टाध्यायीं कण्ठस्थीकृत्वा पाठनीयम्। Participants shall memorize and recite the Ashtadhyayi.
४.	धातुरूपकण्ठपाठः Dhaturupa Recitation	Date - २५-०८-२०२६ Time – 03:00 P.M. Place- Multipurpose Hall	Participants shall memorize and recite Dhaturupas in all 10 Lakaras. प्रतिभागिनः धातुरूपाणि दशसु लकारेषु कण्ठस्थीकृत्वा प्रस्तुतव्यानि।
५.	सुभाषितकण्ठपाठः Subhashita Recitation	Date - २५-०८-२०२६ Time – 04:00 P.M. Place- Multipurpose Hall	प्रतिभागिनः अधोनिर्धारितानि सुभाषितानि कण्ठस्थीकृत्वा प्रस्तुतव्यानि। Participants shall memorize and recite the Subhashitas given below.
६.	भाषणप्रतियोगिता Speech Competition	Date - २४-०८-२०२६ Time – 03:00 P.M. Place- Multipurpose Hall	**विषयः- आधुनिककाले संस्कृतभाषायाः प्रासङ्गिकता (Relevance of Sanskrit Language in the Modern Era)** प्रत्येकप्रतिभागिने भाषणाय पञ्च निमेषाः समयः प्रदास्यते। Each participant will be given 5 minutes for the speech.
७.	सस्वरवेदपारायणप्रतियोगिता Vedic Recitation Competition	Date - २६-०८-२०२६ Time – 11:00 A.M. Place- Multipurpose Hall	प्रतिभागिभिः कस्याश्चिदपि वेदशाखायाः दशमन्त्रान् सस्वरशुद्धोच्चारणपूर्वकं कण्ठस्थीकृत्वा पाठनीयम्। Participants shall memorize and recite ten mantras from any Vedic Sakha with proper Vedic intonation and accurate pronunciation.

केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः
एकलव्यपरिसरः, अगरतला, त्रिपुरा
संस्कृतसप्ताहमहोत्सवः- २०२६

(२१-०८-२०२६ तः २८-०८-२०२६ पर्यन्तम्)

प्रतियोगिताविषयाः नियमावली च

विश्वविद्यालयस्तरीयप्रतियोगिताः (UNIVERSITY LEVEL COMPETITIONS)

वरिष्ठस्तरे शास्त्रिप्रतिष्ठातृतीयवर्षतः विद्यावारिधिपर्यन्तम् (For students of Classes B.A. 3rd Year to Ph.D)

स्थानम् - के.सं.वि.वि.,एकलव्यपरिसरः अगरतला **Place - CSU, Ekalavya Campus, Agartala**

क्र.	स्पर्धाः (Competition)	दिनाङ्कः/ समयः/कक्षः Date/Time/Room	विषयाः/नियमाः (Topic/ Guidelines)
१.	भाषणप्रतियोगिता Speech Competition	Date - २४-०८-२०२६ Time – 11:00 A.M. Place- Multipurpose Hall	**विषयः- नूतनशिक्षानीतिः संस्कृतशिक्षणञ्च** **(National Education Policy and Sanskrit Education)** प्रत्येकप्रतिभागिने भाषणाय पञ्च निमेषाः समयः प्रदास्यते । Each participant will be given 5 minutes for the speech.
२.	निबन्धलेखनप्रतियोगिता Essay Writing Competition	Date - २१-०८-२०२६ Time – 03:00 P.M. Place- Room No. - 116	**विषयः- संस्कृतभाषायाः वैज्ञानिकता** **(Scientific Nature of the Sanskrit Language)** प्रत्येकप्रतिभागिने निबन्धलेखनाय एकघण्टात्मकसमयः प्रदास्यते । Each participant will be given 1 Hour for Writing.
३.	रसप्रश्नप्रतियोगिता Sanskrit Quiz Competition	Date - २४-०८-२०२६ Time – 03:00 P.M. Place- Room No.- 116	प्रतिभागिनः संस्कृतसम्बद्धाप्रश्नानाम् उत्तराणि दास्यन्ति । Participants will answer questions based on Sanskrit.
४.	अक्षरश्लोकीप्रतियोगिता Akshara Shloki Competition	Date - २५-०८-२०२६ Time – 11:00 A.M. Place- Room No. - 116	➤ अक्षरश्लोक्याम् अधोनिर्दिष्टकविभिः विरचितेभ्यः ग्रन्थेभ्यः एव श्लोकाः स्वीकरणीयाः । 1) कालिदासः 2) श्रीहर्षः 3) भारविः 4) माघः 5) भवभूतिः 6) शूद्रकः 7) विशाखदत्तः 8) भर्तृहरिः (सुभाषितत्रिशती) 9) श्रीशंकरभागवत्पादः (स्तोत्राणि) 10) पण्डितराजजगन्नाथः (पञ्चलहर्यः) 11) भोजराजः (चम्पूरामायणम्) 12) अनन्तभट्टः(चम्पूभारतम्) 13) त्रिविक्रमभट्टः (नलचम्पूः) 14) अश्वघोषः 15) भासः 16) नारायणभट्टतिरिः द्वादशस्तोत्रम् 17) मध्वाचार्यः सुमध्वविजयम् 18) नारायणपण्डितः, दयाशतकम् 19) वेदान्तदेशिकः, हयग्रीवस्तोत्रम् ➤ पूर्ववर्तिना स्पर्धालुना पठितस्य श्लोकस्य तृतीयपादगतं प्रथमाक्षरं गृहीत्वा स्वस्वपर्याये स्पर्धालुः श्लोकं पठेत् । यथा- 'कश्चित्

			कान्ता……….' इति मेघदूतश्लोके पठिते सति क्रमागतपर्यायः स्पर्धी यकारेणारभ्यमाणं श्लोकं पठेत्। ➤ स्पर्धां परिसमापयितुम् उपलब्धसमयं, स्पर्धायाः गतिं च वीक्ष्य स्पर्धारम्भानन्तरं क्रमेण नियमाः निर्णायकैः परिशोधयिष्यन्ते। ➤In the Akshara Shlokya Competition, verses shall be selected only from the works of the following prescribed authors: Kalidasa, Sriharsha, Bharavi, Magha, Bhavabhuti, Shudraka, Vishakhadatta, Bhartrihari (Subhashita Trishati), Sri Shankarabhagavatpada (Stotras), Panditaraja Jagannatha (Panchalahari), Bhojaraja (Champu Ramayana), Anantabhatta (Champu Bharata), Trivikrama Bhatta (Nala Champu), Ashvaghosha, Bhasa, Narayanabhatta Tiri (Dvadashastotram), Madhvacharya (Sumadhvavijaya), Narayana Pandita (Dayashatakam), and Vedanta Deshika (Hayagrivastotram). ➤The participant shall recite a verse beginning with the first letter of the third pāda of the verse recited by the preceding participant. For example, if the preceding participant recites "Kascit kanta…" from Meghaduta, the next participant shall recite a verse beginning with the letter "Ya". Depending on the progress of the competition and the available time, the judges may make necessary modifications to the rules after the commencement of the competition.
५.	समस्यापूर्तिप्रतियोगिता Samasya-Purti Competition	Date - २५-०८-२०२६ Time – 03:00 P.M. Place- Room No. - 116	प्रतिभागिभिः प्रदत्तायाः समस्यायाः उचितरीत्या पूर्तिः करणीया। Participants shall complete the given poetic problem (Samasya) appropriately.
६.	सस्वरवेदपारायणप्रतियोगिता Vedic Recitation Competition	Date - २६-०८-२०२६ Time – 10:00 A.M. Place- Multipurpose Hall	प्रतिभागिभिः कस्याश्चिदपि वेदशाखायाः रुद्रसूक्तं सस्वरशुद्धोच्चारणपूर्वकं कण्ठस्थीकृत्वा पाठनीयम्। Participants shall recite the Rudra Sukta from any Vedic sakha with proper Vedic intonation and pronunciation.

केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः
एकलव्यपरिसरः, अगरतला, त्रिपुरा
संस्कृतसप्ताहमहोत्सवः- २०२६

(२१-०८-२०२६ तः २८-०८-२०२६ पर्यन्तम्)

प्रतियोगिताविषयाः नियमावली च

सर्वस्तरीयप्रतियोगिताः (COMMON COMPETITIONS FOR ALL LEVELS)

स्थानम् - के.सं.वि.वि.,एकलव्यपरिसरः अगरतला　　　**Place - CSU, Ekalavya Campus, Agartala**

क्र.	स्पर्धाः (Competition)	दिनाङ्कः/ समयः/कक्षः Date/Time/Room	विषयाः/नियमाः (Topic/ Guidelines)
१.	संस्कृत-व्लॉग-निर्माणप्रतियोगिता Sanskrit Vlog Making Competition	Before 26th August 2026	प्रतिभागिभिः संस्कृतभाषायां ६०-सेकेण्ड्-परिमितः रचनात्मकः व्लॉगः निर्मातव्यः। व्लॉगनिर्माणस्य विषयः संस्कृतभाषायाः एकलव्यपरिसरस्य प्रचारः प्रसारश्च। व्लॉगः २६-०८-२०२६ तिथेः पूर्वं Instagram इत्यत्र अपलोड् करणीयः तथा एकलव्यपरिसरस्य आधिकारिकं पृष्ठं सम्बद्धं (Instagram Account Tag) करणीयम्। Participants shall create a creative 60-second Vlog in Sanskrit with the main objective of promoting and popularizing the Sanskrit language and Ekalavya Campus. The Vlog must be uploaded on Instagram before 26th August 2026, and the official Ekalavya Campus account must be tagged in the post.
२.	नृत्यप्रतियोगिता Dance Competition	Date - २६-०८-२०२६ Time – 04:00 P.M. Place- Multipurpose Hall	प्रतिभागिभिः संस्कृतगीतं, संस्कृतश्लोकं, संस्कृतविषयं वा आधारीकृत्य नृत्यप्रस्तुतिः करणीया। Participants shall present a dance based on a Sanskrit song, Shloka or Sanskrit theme.
३.	संस्कृतनाटकप्रतियोगिता Sanskrit Drama Competition	Date - २६-०८-२०२६ Time – 03:00 P.M. Place- Multipurpose Hall	प्रतिभागिभिः संस्कृतभाषायां नाटकस्य प्रस्तुतिः करणीया। Participants shall present a drama in Sanskrit language.
४.	संस्कृतगीतगायनप्रतियोगिता Sanskrit Song Singing Competition	Date - २६-०८-२०२६ Time – 12:00 P.M. Place- Multipurpose Hall	प्रतिभागिभिः संस्कृतभाषायां गीतप्रस्तुतिः करणीया। Participants shall present a song in Sanskrit.

निर्दिष्टानि सुभाषितानि

दिक्कालाद्यनवच्छिन्नानन्तचिन्मात्रमूर्तये ।
स्वानुभूत्येकमानाय नमः शान्ताय तेजसे ॥ १॥

यां चिन्तयामि सततं मयि सा विरक्ता
साप्यन्यमिच्छति जनं स जनोऽन्यसक्तः ।
अस्मत्कृते च परिशुष्यति काचिदन्या
धिक् तां च तं च मदनं च इमां च मां च ॥ २॥

अज्ञः सुखमाराध्यः सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः ।
ज्ञानलवदुर्विग्धं ब्रह्मापि नरं न रञ्जयति ॥ ३॥

प्रसह्य मणिमुद्धरेन्मकरवक्त्रदंष्ट्राङ्कुरा-
त्समुद्रमपि संतरेत्प्रचलदुर्मिमालाकुलम् ॥
भुजङ्गमपि कोपितं शिरसि पुष्पवद्धारये-
न्न तु प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत् ॥ ४॥

लभेत सिकतासु तैलमपि यत्नतः पीडयन्
पिबेच्च मृगतृष्णिकासु सलिलं पिपासार्दितः ।
कदाचिदपि पर्यटन्शशविषाणमासादयेन्
न तु प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत् ॥ ५॥

व्यालं बालमृणालतन्तुभिरसौ रोद्धुं समुज्जृम्भते
छेत्तुं वज्रमणिं शिरीषकुसुमप्रान्तेन सन्नह्यति ।
माधुर्यं मधुबिन्दुना रचयितुं क्षाराम्बुधेरीहते
नेतुं वाञ्छति यः खलान्पथि सतां सूक्तैः सुधास्यन्दिभिः ॥ ६॥

स्वायत्तमेकान्तगुणं विधात्रा
विनिर्मितं छादनमज्ञतायाः ।
विशेषतः सर्वविदां समाजे
विभूषणं मौनमपण्डितानाम् ॥ ७॥

यदा किञ्चिज्ज्ञोऽहं गज इव मदान्धः समभवम्
तदा सर्वज्ञोऽस्मीत्यभवदवलिप्तं मम मनः ।
यदा किञ्चित्किञ्चिद्बुधजनसकाशादवगतम्
तदा मूर्खोऽस्मीति ज्वर इव मदो मे व्यपगतः ॥ ८॥

कृमिकुलचितं लालाक्लिन्नं विगन्धि जुगुप्सितं
निरूपमरसं प्रीत्या खादन्नरास्थि निरामिषम् ।
सुरपतिमपि श्वा पार्श्वस्थं विलोक्य न शङ्कते
न हि गणयति क्षुद्रो जन्तुः परिग्रहफल्गुताम् ॥ ९॥

शिरः शार्वं स्वर्गात्पशुपतिशिरस्तः क्षितिधरं
महीध्राादुत्तुङ्गादवनिमवनेश्चापि जलधिम् ।
अधोऽधो गङ्गेयं पदमुपगता स्तोकमथवा
विवेकभ्रष्टानां भवति विनिपातः शतमुखः ॥ १०॥

शक्यो वारयितुं जलेन हुतभुक्छत्रेण सूर्यातपो
नागेन्द्रो निशिताङ्कुशेन समदो दण्डेन गोगर्दभौ ।
व्याधिर्भेषजसङ्ग्रहैश्च विविधैर्मन्त्रप्रयोगैर्विषं
सर्वस्यौषधमस्ति शास्त्रविहितं मूर्खस्य नास्त्यौषधम् ॥ ११॥

साहित्यसङ्गीतकलाविहीनः साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः ।
तृणं न खादन्नपि जीवमानः तद्भागधेयं परमं पशूनाम् ॥ १२॥

येषां न विद्या न तपो न दानं
ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः ।
ते मर्त्यलोके भुवि भारभूताः
मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति ॥ १३॥
वरं पर्वतदुर्गेषु भ्रान्तं वनचरैः सह ।
न मूर्खजनसम्पर्कः सुरेन्द्रभवनेष्वपि ॥ १४॥

शास्त्रोपस्कृतशब्दसुन्दरगिरः शिष्यप्रदेयागमा

विख्याताः कवयो वसन्ति विषये यस्य प्रभोर्निर्धनाः ।
तज्जाड्यं वसुधाधिपस्य कवयस्त्वर्थं विनापीश्वराः
कुत्स्याः स्युः कुपरीक्षका न मणयो यैरर्घतः पातिताः ॥ १५॥

हर्तुर्याति न गोचरं किमपि शं पुष्णाति यत् सर्वदा-
ऽप्यर्थिभ्यः प्रतिपाद्यमानमनिषं प्राप्नोति वृद्धिं पराम् ।
कल्पान्तेष्वपि न प्रयाति निधनं विद्याख्यमन्तर्धनं
येषां तान् प्रति मानमुज्झत नृपाः कस्तैः सह स्पर्धते ॥ १६॥

अधिगतपरमार्थान् पण्डितान् मावमंस्था-
स्तृणमिव लघु लक्ष्मीर्नैव तान् संरुणद्धि ।
अभिनवमदलेखाश्यामगण्डस्थलानां
न भवति विपतन्तुर्वारणं वारणानाम् ॥ १७॥

अम्भोजिनीवनविहारविलासमेव
हंसस्य हन्ति नितरां कुपितो विधाता ।
न त्वस्य दुग्धजलभेदविधौ प्रसिद्धां
वैदग्ध्यकीर्तिमपहर्तुमसौ समर्थः ॥ १८॥

केयूराणि न भूषयन्ति पुरुषं हारा न चन्द्रोज्ज्वला
न स्नानं न विलेपनं न कुसुमं नालङ्कृता मूर्धजाः ।
वाण्येका समलङ्करोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते
क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं वाग्भूषणं भूषणम् ॥ १९॥

विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनं
विद्या भोगकरी यशस्सुखकरी विद्या गुरूणां गुरुः ।
विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परा देवता
विद्या राजसु पूजिता न तु धनं विद्याविहीनः पशुः ॥ २०॥
क्षान्तिश्चेत् कवचेन किं किमरिभिः क्रोधोऽस्ति चेद्देहिनां
ज्ञातिश्चेदनलेन किं यदि सुहृद् दिव्यौषधैः किं फलम् ।
किं सर्पैर्यदि दुर्जनाः किमु धनैर्विद्या न वन्द्या यदि
व्रीडा चेत्किमु भूषणैः सुकविता यद्यस्ति राज्येन किम् ॥ २१॥

दाक्षिण्यं स्वजने दया परजने शाठ्यं सदा दुर्जने
प्रीतिः साधुजने नयो नृपजने विद्वज्जने चार्जवम् ।
शौर्यं शत्रुजने क्षमा गुरुजने कान्ताजने धृष्टता
ये चैवं पुरुषाः कलासु कुशलास्तेष्वेव लोकस्थितिः ॥ २२॥

जाड्यं धियो हरति सिञ्चति वाचि सत्यं
मानोन्नतिं दिशति पापमपाकरोति ।
चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्तिं
सत्सङ्गतिः कथय किं न करोति पुंसाम् ॥ २३॥

जयन्ति ते सुकृतिनो रससिद्धाः कवीश्वराः ।
नास्ति येषां यशःकाये जरामरणजं भयम् ॥ २४॥

सूनुः सच्चरितः सती प्रियतमा स्वामी प्रसादोन्मुखः
स्निग्धं मित्रमवञ्चकः परिजनो निष्क्लेशलेशं मनः ।
आकारो रुचिरः स्थिरश्च विभवो विद्यावदातं मुखं
तुष्टे विष्टपकष्टहारिणि हरौ सम्प्राप्यते देहिना ॥ २५॥

प्राणाघातान्निवृत्तिः परधनहरणे संयमः सत्यवाक्यं
काले शक्त्या प्रदानं युवतिजनकथामूकभावः परेषाम् ।
तृष्णास्रोतोविभङ्गो गुरुषु च विनयः सर्वभूतानुकम्पा
सामान्यः सर्वशास्त्रेष्वनुपहतविधिः श्रेयसामेष पन्थाः ॥ २६॥

प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः
प्रारभ्य विघ्नविहता विरमन्ति मध्याः ॥
विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः
प्रारब्धमुत्तमगुणा न परित्यजन्ति ॥ २७॥
असन्तो नाभ्यर्थ्याः सुहृदपि न याच्यः कृशधनः
प्रिया न्याय्या वृत्तिर्मलिनमसुभङ्गेऽप्यसुकरम् ।
विपद्युच्चैः स्थेयं पदमनुविधेयं च महतां
सतां केनोद्दिष्टं विषममसिधाराव्रतमिदम् ॥ २८॥

क्षुत्क्षामोऽपि जराकृशोऽपि शिथिलप्रायोऽपि कष्टां दशाम्
आपन्नोऽपि विपन्नदीधितिरपि प्राणेषु गच्छत्स्वपि ।
मत्तेभेन्द्रविभिन्नकुम्भकवलग्रासैकबद्धस्पृहः
किं जीर्णं तृणमत्ति मानमहतामग्रेसरः केसरिः ॥ २९ ॥

स्वल्पस्नायुवसावशेषमलिनं निर्मांसमप्यस्थिकं
श्वा लब्ध्वा परितोषमेति न तु तत्तस्य क्षुधाशान्तये ।
सिंहो जम्बुकमङ्कमागतमपि त्यक्त्वा निहन्ति द्विपं
सर्वः कृच्छ्रगतोऽपि वाञ्छति जनः सत्वानुरुपं फलम् ॥ ३० ॥

लाङ्गुलचालनमधश्चरणावपातं
भूमौ निपत्य वदनोदरदर्शनं च ।
श्वा पिण्डदस्य कुरुते गजपुङ्गवस्तु
धीरं विलोकयति चाटुशतैश्च भुङ्क्ते ॥ ३१ ॥

परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते ॥
स जातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम् ॥ ३२ ॥

कुसुमस्तबकस्येव द्वयी वृत्तिर्मनस्विनः ।
मूर्ध्नि वा सर्वलोकस्य विशीर्येत वनेऽथवा ॥ ३३ ॥

सन्त्यन्येऽपि बृहस्पतिप्रभृतयः सम्भाविताः पञ्चषाः
तान् प्रत्येष विशेषविक्रमरुची राहुर्न वैरायते ।
द्वावेव ग्रसते दिवाकरनिशाप्राणेश्वरौ भास्वरौ
भ्रातः पर्वणि पश्य दानवपतिः शीर्षावशेषाकृतिः ॥ ३४ ॥

वहति भुवनश्रेणिं शेषः फणाफलस्थितां
कमठपतिना मध्ये पृष्ठं सदा च धार्यते ।
तमपि कुरुते क्रोधाधीनं पयोधिरनादरा-
दहह महतां निःसीमानश्चरित्रविभूतयः ॥ ३५ ॥

वरं पक्षच्छेदः समदमघवन्मुक्तकुलिश-
प्रहारैरुद्गच्छद्बहुलदहनोद्गारगुरुभिः ।
तुषाराद्रेः सूनोरहह पितरि क्लेशविवशे
न चासौ सम्पातः पयसि पयसां पत्युरुचितः ॥ ३६ ॥

यदचेतनोऽपि पादैः स्पृष्टः प्रज्वलति सवितुरिनकान्तः ।
तत्तेजस्वी पुरुषः परकृतनिकृतिं कथं सहते ॥ ३७ ॥

सिंहःशिशुरपि निपतति मदमलिनकपोलभित्तिषु गजेषु ।
प्रकृतिरियं सत्ववतां न खलु वयसस्तेजसो हेतुः ॥ ३८ ॥
जातिर्यातु रसातलं गुणगणैस्तत्राप्यधो गम्यतां
शीलं शैलतटात्पतत्वभिजनः सन्दह्यतां वह्निना ।
शौर्ये वैरिणि वज्रमाशु निपतत्वर्थोऽस्तु नः केवलं
येनैकेन विना गुणास्तृणलवप्रायाः समस्ता इमे ॥ ३९ ॥

तानीन्द्रियाण्यविकलानि तदेव नाम
सा बुद्धिरप्रतिहता वचनं तदेव ।
अर्थोष्मणा विरहितः पुरुषः क्षणेन
सोऽप्यन्य एव भवतीति विचित्रमेतत् ॥ ४० ॥

यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः
स पण्डितः स श्रुतवान् गुणज्ञः ।
स एव वक्ता स च दर्शनीयः
सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ति ॥ ४१ ॥

दौर्मन्त्र्यान्नृपतिर्विनश्यति यतिः सङ्गात् सुतो लालनाद्
विप्रोऽनध्यनात् कुलं कुतनयाच्छीलं खलोपासनात् ।
ह्रीर्मद्यादनवेक्षणादपि कृषिः स्नेहः प्रवासाश्र-
यान्मैत्री चाप्रणयात् समृद्धिरनयात् त्यागः प्रमादाद्धनम् ॥ ४२ ॥

दानं भोगो नाशस्तिस्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य ।

यो न ददाति न भुङ्क्ते तस्य तृतीया गतिर्भवति ॥ ४३ ॥

मणिः शोणाल्लीढः समरविजयी हेतिदलितो
मदक्षीबो नागः शरदि सरितः श्यानपुलिनाः ।
कलाशेषश्चन्द्रः सुरतमृदिता बालवनिता
तनिम्ना शोभन्ते गलितविभवाश्चार्थिषु नराः ॥ ४४ ॥

परिक्षीणः कश्चित्स्पृहयति यवानां प्रसृतये
स पश्चात् सम्पूर्णः कलयति धरित्रीं तृणसमाम् ।
अतश्चानैकान्त्याद्गुरुलघुतयाऽर्थेषु धनिना-
मवस्था वस्तूनि प्रथयति च सङ्कोचयति च ॥ ४५ ॥

राजन् दुधुक्षसि यदि क्षितिधेनुमेतां
तेनाद्य वत्समिव लोकममुं पुषाण ।
तस्मिंश्च सम्यगनिशं परिपोष्यमाणे
नानाफलैः फलति कल्पलतेव भूमिः ॥ ४६ ॥

सत्यानृता च परुषा प्रियवादिनी च
हिंस्रा दयालुरपि चार्थपरा वदान्या ।
नित्यव्यया प्रचुरनित्यधनागमा च
वाराङ्गनेव नृपनीतिरनेकरुपा ॥ ४७ ॥

आज्ञा कीर्तिः पालनं ब्राह्मणानां
दानं भोगः मित्रसंरक्षणं च ।
येषामेते षङ्गुणा न प्रवृत्ताः
कोऽर्थस्तेषां पार्थिवोपाश्रयेण ॥ ४८ ॥

यद्धात्रा निजभालपट्टलिखितं स्तोकं महद्वा धनं
तत् प्राप्नोति मरुस्थलेऽपि नितरां मेरौ ततो नाधिकम् ।
तद्धीरो भव वित्तवत्सु कृपणां वृत्तिं वृथा मा कृथाः
कूपे पश्य पयोनिधावपि घटो गृह्णाति तुल्यं जलम् ॥ ४९ ॥

त्वमेव चातकाधार इति केषां न गोचरः ।
किमम्भोद वदास्माकं कार्पण्योक्तिं प्रतीक्षसे ॥ ५० ॥

रे रे चातक सावधानमनसा मित्र क्षणं श्रूयताम्
अम्भोदा बहवो वसन्ति गगने सर्वेऽपि नैतादृशाः ।
केचिद्वृष्टिभिरार्द्रयन्ति धरणीं गर्जन्ति केचिद्वृथा
यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतो मा ब्रूहि दीनं वचः ॥ ५१ ॥

अकरुणत्वमकारणविग्रहः परधने परयोषिति च स्पृहा ।
सुजनबन्धुजनेष्वसहिष्णुता प्रकृतिसिद्धमिदं हि दुरात्मनाम् ॥ ५२ ॥

दुर्जनः परिहर्तव्यो विद्ययालङ्कृतोऽपि सन् ।
मणिना भूषितः सर्पः किमसौ न भयङ्करः ॥ ५३ ॥

जाड्यं ह्रीमति गण्यते व्रतरुचौ दम्भः शुचौ कैतवं
शूरे निर्घृणता मुनौ विमतिता दैन्यं प्रियालापिनि ।
तेजस्विन्यवलिप्तता मुखरता वक्तर्यशक्तिः स्थिरे
तत्को नाम गुणो भवेत्स गुणिनां यो दुर्जनैर्नाङ्कितः ॥५४ ॥

लोभश्चेदगुणेन किं पिशुनता यद्यस्ति किं पातकैः
सत्यं चेत्तपसा च किं शुचि मनो यद्यस्ति तीर्थेन किम् ।
सौजन्यं यदि किं गुणैः सुमहिमा यद्यस्ति किं मण्डनैः
सद्विद्या यदि किं धनैरपयशो यद्यस्ति किं मृत्युना ॥ ५५ ॥

शशी दिवसधूसरो गलितयौवना कामिनी
सरो विगतवारिजं मुखमनक्षरं स्वाकृतेः ।
प्रभुर्धनपरायणः सततदुर्गतः सज्जनो
नृपाङ्गणगतः खलो मनसि सप्त शल्यानि मे ॥ ५६ ॥
न कश्चिच्चण्डकोपानामात्मीयो नाम भूभुजाम् ।
होतारमपि जुह्वानं स्पृष्टो दहति पावकः ॥ ५७ ॥

मौनान्मूकः प्रवचनपटुर्वातुलो जल्पको वा
धृष्टः पार्श्वे वसति च सदा दूरतश्चाप्रगल्भः ।
क्षान्त्या भीरुर्यदि न सहते प्रायशो नाभिजातः

सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः ॥ ५८॥

उद्भासिताखिलखलस्य विशृङ्खलस्य
प्राग्जातविस्तृतनिजाधमकर्मवृत्तेः ।
दैवादवाप्तविभवस्य गुणद्विषोऽस्य
नीचस्य गोचरगतैः सुखमाप्यते कैः ॥ ५९॥

आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण
लघ्वी पुरा वृद्धिमती च पश्चात् ।
दिनस्य पूर्वार्धपरार्धभिन्ना
छायेव मैत्री खलसज्जनानाम् ॥ ६०॥

मृगमीनसज्जनानां तृणजलसन्तोषविहितवृत्तिनाम् ।
लुब्धकधीवरपिशुना निष्कारणवैरिणो जगति ॥ ६१॥

वाञ्छा सज्जनसङ्गमे परगुणे प्रीतिर्गुरौ नम्रता
विद्यायां व्यसनं स्वयोषिति रतिर्लोकापवादाद्भयम् ।
भक्तिः शूलिनि शक्तिरात्मदमने संसर्गमुक्तिः खले
येष्वेते निवसन्ति निर्मलगुणास्तेभ्यो नरेभ्यो नमः ॥ ६२॥

विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा सदसि वाक्पटुता युधि विक्रमः ।
यशसि चाभिरुचिर्व्यसनं श्रुतौ प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम् ॥ ६३॥

प्रदानं प्रच्छन्नं गृहमुपगते सम्भ्रमविधिः
प्रियं कृत्वा मौनं सदसि कथनं चाप्युपकृते ।
अनुत्सेको लक्ष्म्यामनभिभवगन्धाः परकथाः
सतां केनोद्दिष्टं विषममसिधाराव्रतमिदम् ॥ ६४॥

करे श्लाघ्यस्त्यागः शिरसि गुरुपादप्रणयिता
मुखे सत्या वाणी विजयिभुजयोर्वीर्यमतुलम् ।
हृदि स्वच्छा वृत्तिः श्रुतमधिगतं च श्रवणयो-
र्विनाप्यैश्वर्येण प्रकृतिमहतां मण्डनमिदम् ॥ ६५॥

सम्पत्सु महतां चित्तं भवत्युत्पलकोमलम् ।
आपत्सु च महाशैलशिलासङ्घातकर्कशम् ॥ ६६॥

सन्तप्तायसि संस्थितस्य पयसो नामापि न ज्ञायते
मुक्ताकारतया तदेव नलिनीपत्रस्थितं राजते ।
स्वात्यां सागरशुक्तिमध्यपतितं तन्मौक्तिकं जायते
प्रायेणाधममध्यमोत्तमगुणः संसर्गतो जायते ॥ ६७॥

प्रीणाति यः सुचरितः पितरं स पुत्रो
यद्भर्तुरेव हितमिच्छति तत् कलत्रम् ।
तन्मित्रमापदि सुखे च समक्रियं यद्
एतत् त्रयं जगति पुण्यकृतो लभन्ते ॥ ६८॥

एको देवः केशवो वा शिवो वा
ह्येकं मित्रं भूपतिर्वा यतिर्वा ।
एको वासः पत्तने वा वने वा
ह्येका भार्या सुन्दरी वा दरी वा ॥ ६९॥

नम्रत्वेनोन्नमन्तः परगुणकथनैः स्वान् गुणान् ख्यापयन्तः
स्वार्थान् सम्पादयन्तो विततपृथुतरारम्भयत्नाः परार्थे ।
क्षान्त्यैवाक्षेपरुक्षाक्षरमुखरमुखान् दुर्जनान् दूषयन्तः
सन्तः साश्चर्यचर्या जगति बहुमताः कस्य नाभ्यर्चनीयाः ॥ ७०॥

भवन्ति नम्रास्तरवः फलोद्गमै-
र्नवाम्बुभिर्दूरविलम्बिनो घनाः ।
अनुद्धताः सत्पुरुषाः समृद्धिभिः
स्वभाव एवैष परोपकारिणाम् ॥ ७१॥

श्रोत्रं श्रुतेनैव न कुण्डलेन
दानेन पाणिर्न तु कङ्कणेन ।
विभाति कायः करुणापराणां

परोपकारैर्न तु चन्दनेन ॥ ७२ ॥

पापान्निवारयति योजयते हिताय
गुह्यं निगूहति गुणान् प्रकटीकरोति ।
आपद्गतं च न जहाति ददाति काले
सन्मित्रलक्षणमिदं निगदन्ति सन्तः ॥ ७३ ॥

पद्माकरं दिनकरो विकचीकरोति
चन्द्रो विकासयति कैरवचक्रवालम् ।
नाभ्यर्थितो जलधरोऽपि जलं ददाति
सन्तः स्वयं परहिते विहिताभियोगाः ॥ ७४ ॥

एते सत्पुरुषाः परार्थघटकाः स्वार्थं परित्यज्य ये
सामान्यास्तु परार्थमुद्यमभृतः स्वार्थाविरोधेन ये ।
तेऽमी मानवराक्षसाः परहितं स्वार्थाय निघ्नन्ति ये
ये निघ्नन्ति निरर्थकं परहितं ते के न जानीमहे ॥ ७५ ॥

क्षीरेणात्मगतोदकाय हि गुणा दत्ताः पुरा तेऽखिलाः
क्षीरोत्तापमवेक्ष्य तेन पयसा स्वात्मा कृशाणौ हुतः ।
गन्तुं पावकमुन्मनस्तदभवद् दृष्ट्वा तु मित्रापदं
युक्तं तेन जलेन शाम्यति सतां मैत्री पुनस्त्वीदृशी ॥ ७६ ॥

इतः स्वपिति केशवः कुलमितस्तदीयद्विषा-
मितश्च शरणार्थिनां शिखरिणां गणाः शेरते ।
इतोऽपि वडवानलः सह समस्तसंवर्तकै-
रहो विततमूर्जितं भारसहं च सिन्धोर्वपुः ॥ ७७ ॥

तृष्णां छिन्धि भज क्षमां जहि मदं पापे रतिं मा कृथाः
सत्यं ब्रूह्यनुयाहि साधुपदवीं सेवस्व विद्वज्जनान् ।
मान्यान् मानय विद्विषोऽप्यनुनय प्रख्यापय प्रश्रयं
कीर्तिं पालय दुःखिते कुरु दयामेतत् सतां चेष्टितम् ॥ ७८ ॥

मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णाः
त्रिभुवनमुपकारश्रेणिभिः प्रीणयन्तः ।
परगुणपरमाणून् पर्वतीकृत्य नित्यं
निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः ॥ ७९ ॥

किं तेन हेमगिरिणा रजताद्रिणा वा
यत्राश्रिताश्च तरवस्तरवन्त एव ।
मन्यामहे मलयमेव यदाश्रयेण
कङ्कोलनिम्बकुटजा अपि चन्दनाः स्युः ॥ ८० ॥

रत्नैर्महार्हैस्तुतुषुर्न देवा
न भेजिरे भीमविषेण भीतिम् ।
सुधां विना न प्रययुर्विरामं
न निश्चितार्थाद्विरमन्ति धीराः ॥ ८१ ॥

क्वचित् पृथ्वीशय्यः क्वचिदपि च पर्यङ्कशयनः
क्वचिच्छाकाहारः क्वचिदपि च शाल्योदनरुचिः ।
क्वचित् कन्थाधारी क्वचिदपि च दिव्याम्बरधरो
मनस्वी कार्यार्थी न गणयति च दुःखं न च सुखम् ॥ ८२ ॥

ऐश्वर्यस्य विभूषणं सुजनता शौर्यस्य वाक्संयमो
ज्ञानस्योपशमः श्रुतस्य विनयो वित्तस्य पात्रे व्ययः ।
अक्रोधस्तपसः क्षमा प्रभवितुर्धर्मस्य निर्व्याजता
सर्वेषामपि सर्वकारणमिदं शीलं परं भूषणम् ॥ ८३ ॥

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु
लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम् ।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा
न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः ॥ ८४ ॥

पातितोऽपि कराघातैरुत्पतत्येव कन्दुकः ।

प्रायेण साधुवृत्तनामस्थायिन्यो विपत्तयः ॥ ८५॥

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महारिपुः ।
नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कुर्वाणो नावसीदति ॥ ८६॥

छिन्नोऽपि रोहति तरुश्चन्द्रः क्षीणोऽपि वर्धते लोके ।
इति विमृशन्तः सन्तः सन्तप्यन्ते न लोकेऽस्मिन् ॥ ८७॥

नेता यस्य बृहस्पतिः प्रहरणं वज्रं सुराः सैनिकाः
स्वर्गो दुर्गमनुग्रहः खलु हरेरैरावतो वारणः ।
इत्यैश्वर्यबलान्वितोऽपि बलभिद्भग्नः परैः सङ्गरे
तद्व्यक्तं ननु दैवमेव शरणं धिग्धिग्वृथा पौरुषम् ॥ ८८॥

भग्नाशस्य करण्डपिण्डिततनोर्म्लानेन्द्रियस्य क्षुधा
कृत्वाखुर्विवरं स्वयं निपतितो नक्तं मुखे भोगिनः ।
तृप्तस्तत्पिशितेन सत्वरमसौ तेनैव यातः पथा
लोकाः पश्यत दैवमेव हि नृणां वृद्धौ क्षये कारणम् ॥ ८९॥

कर्मायत्तं फलं पुंसां बुद्धिः कर्मानुसारिणी ।
तथापि सुधिया भाव्यं सुविचार्यैव कुर्वता ॥ ९०॥

खल्वाटो दिवसेश्वरस्य किरणैः सन्तापितो मस्तके
वाञ्छन्देशमनातपं विधिवशात्तालस्य मूलं गतः ।
तत्रोच्चैर्महता फलेन पतता भग्नं सशब्दं शिरः
प्रायो गच्छति यत्र भाग्यरहितस्तत्रापदां भाजनम् ॥ ९१॥

रविनिशाकरयोर्ग्रहपीडनं गजभुजङ्गमयोरपि बन्धनम् ।
मतिमतां च विलोक्य दरिद्रतां विधिरहो बलवानिति मे मतिः ॥ ९२॥

सृजति तावदशेषगुणाकरं पुरुषरत्नमलङ्करणं भुवः ।
तदपि तत्क्षणभङ्गि करोति चेदहह कष्टमपण्डितता विधेः ॥ ९३॥

पत्रं नैव यदा करीरविटपे दोषो वसन्तस्य किं
नोलूकोऽप्यवलोकते यदि दिवा सूर्यस्य किं दूषणम् ।

धारा नैव पतन्ति चातकमुखे मेघस्य किं दूषणं
यत्पूर्वं विधिना ललाटलिखितं तन्मार्जितुं कः क्षमः ॥ ९४॥

नमस्यामो देवान्ननु हतविधेस्तेऽपि वशगा
विधिर्वन्द्यः सोऽपि प्रतिनियतकर्मैकफलदः ।
फलं कर्मायत्तं यदि किममरैः किञ्च विधिना
नमस्तत्कर्मभ्यो विधिरपि न येभ्यः प्रभवति ॥ ९५॥

ब्रह्मा येन कुलालवन्नियमितो ब्रह्माण्डभाण्डोदरे
विष्णुर्येन दशावतारगहने क्षिप्तो महासङ्कटे ।
रुद्रो येन कपालपाणिपुटके भिक्षाटनं कारितः
सूर्यो भ्राम्यति नित्यमेव गगने तस्मै नमः कर्मणे ॥ ९६॥

नैवाकृतिः फलति नैव कुलं न शीलं
विद्यापि नैव न च यत्नकृतापि सेवा ।
भाग्यानि पूर्वतपसा खलु सञ्चितानि
काले फलन्ति पुरुषस्य यथैव वृक्षाः ॥ ९७॥
वने रणे शत्रुजलाग्निमध्ये
महार्णवे पर्वतमस्तके वा ।
सुप्तं प्रमत्तं विषमस्थितं वा
रक्षन्ति पुण्यानि पुरा कृतानि ॥ ९८॥
या साधूंश्च खलान् करोति विदुषो मूर्खान् हितान् द्वेषिणः
प्रत्यक्षं कुरुते परोक्षममृतं हालाहलं तत्क्षणात् ।
तामाराधय सत्क्रियां भगवतीं भोक्तुं फलं वाञ्छितं
हे साधो व्यसनैर्गुणेषु विपुलेष्वास्थां वृथा मा कृथाः ॥ ९९॥

गुणवदगुणवद्वा कुर्वता कार्यजातं
परिणतिरवधार्या यत्नतः पण्डितेन ।
अतिरभसकृतानां कर्मणामाविपत्ते-
र्भवति हृदयदाही शल्यतुल्यो विपाकः ॥ १००॥

केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः
एकलव्यपरिसरः, अगरतला, त्रिपुरा
संस्कृतसप्ताहमहोत्सवः- २०२६

(२१-०८-२०२६ तः २८-०८-२०२६ पर्यन्तम्)

प्रतियोगिताविषयाः नियमावली च

सर्वप्रतियोगितानां सामान्यनियमाः (COMMON RULES FOR ALL COMPETITIONS)

1. **न्यूनतमप्रतिभागिनः / Minimum Participants**

प्रत्येकप्रतियोगितायाः आयोजनाय न्यूनातिन्यूनं पञ्च प्रतिभागिनः आवश्यकाः सन्ति।

A minimum of 5 participants is required for each competition.

2. **भाषा / Language**

सर्वाः प्रतियोगिताः प्रस्तुतयश्च संस्कृतभाषायामेव भविष्यन्ति।

All competitions and presentations shall be conducted in Sanskrit.

3. **निर्णयनम् / Judgement**

निर्णायकमण्डलस्य निर्णयः अन्तिमः सर्वमान्यश्च भविष्यति।

The decision of the Judging Panel shall be final and binding.

4. **अनुशासनम् / Discipline**

सर्वैः प्रतिभागिभिः कार्यक्रमस्य सम्पूर्णकाले अनुशासनं शिष्टाचारं च पालनीयम्।

All participants must maintain proper discipline and decorum throughout the programme.

5. **एकाधिकसहभागिता / Multiple Participation**

समयसङ्घर्षः न भवति चेत् प्रतिभागी एकाधिकासु प्रतियोगितासु सहभागितां कर्तुं शक्नोति।

A participant may participate in more than one competition, provided that the schedules do not clash.

6. **सस्वरवेदपारायणप्रतियोगिता / Vedic Recitation Competition**

सस्वरवेदपारायणप्रतियोगितायाः कृते षष्ठीकक्षातः द्वादशकक्षापर्यन्तं छात्राः महाविद्यालयस्तरे, द्वादशकक्षातः ऊर्ध्वं विश्वविद्यालयस्तरे सहभागितां करिष्यन्ति।

For the Vedic Recitation Competition only, students from Class 6 to Class 12 shall participate in the College Level, while students above Class 12 shall participate in the University Level.

पञ्जीकरणम् (REGISTRATION)

1. विद्यालयस्तरीयप्रतियोगितानां कृते पञ्जीकरणं सम्बन्धितविद्यालयेन अधः प्रदत्तेन पञ्जीकरण-सूत्रमाध्यमेन करणीयम्।
2. Registration of students for the School Level Competitions shall be done by the respective schools through the link provided below

   पञ्जीकरण-सूत्रम् / Registration Link - **https://forms.gle/em3fyCtRBszPKh2g6**
3. महाविद्यालय-विश्वविद्यालयस्तरीयप्रतियोगितानां कृते प्रतिभागिभिः अधः प्रदत्तस्य पञ्जीकरण-सूत्रमाध्यमेन पञ्जीकरणं करणीयम्।

   College & University Level Competitions - Participants must register online through the Google Form link provided below.

   पञ्जीकरण-सूत्रम् / Registration Link - **https://forms.gle/iWFMGyceRF6kcSvHA**
4. पञ्जीकरणस्य अन्तिमतिथिः - **२० अगस्त २०२६**/ Last Date for Registration - **20th August 2026**
5. यदि कापि समस्या भवति चेत् कृपया सम्पर्कं कुर्वन्तु। For any queries or assistance, please contact-

   सम्पर्कसूत्रम्/ Contact Details- 9064948387, 9777677387

12/8/2026

12/8/2026

प्रो. सुशान्तकुमारराजः/ Prof. S. K. Raj
संयोजकः / Coordinator

प्रो. गुरुचरणसिंहनेगी/Prof. G. C. S. Negi
निदेशकः / Director